

चुभना- (आँखों में) खटकना, बुरा लगना; आँख में तरावट आना- मन का प्रसन्न हो जाना; आँख में धूल डालना- धोखा देना, भ्रमित करना, ठगना; आँख में नाचना- दृष्टि के सामने बने रहना; आँखों आँखों में पालना- बहुत लाड़-प्यार से पालन करना; आँख में फिरना- दृष्टि में (याद में) लगातार बने रहना; आँख में बसना- किसी वस्तु, व्यक्ति या भाव का हृदय में समा जाना; आँखों में बैठना- आँखों में बस जाना, पसंद आना; आँखों में रखना- प्रेम से रखना, लाड़-प्यार से पालना; आँखों में रात काटना- सारी रात नींद न आना, कष्ट से रात बिताना; आँखों में शील होना- मन में विनम्रता होना, मर्यादा का भाव होना; आँखों में समाना- हृदय में बस जाना, ध्यान पर चढ़ना; आँख लगना- नींद आना, झपकी आना, प्रीति होना; आँख लगाना- एकटक देखना, प्रीति लगाना; आँख लड़ना- (प्रेम में) आँख मिलना, प्रेम होना; आँख लड़ाना- आँख मिलाना, नजर मिलाना, प्रेम करना; आँखों ललचाना- देखने की प्रबल इच्छा होना; आँख सेंकना- सुंदरता को निहारना; आँख से आँख मिलाना- नजर लड़ाना, आमने-सामने मिलना; आँख से ओझल होना- दिखाई न पड़ना; आँख होना- परख होना, पहचान होना।

आँखड़ा पुं. (देश.) उदासीनता, नजरअंदाज़ करने का कार्य।

आँखफोड़ वि. (देश.) आँख फोड़ने वाला।

आँखफोड़ टिड्डा पुं. (देश.) हरे रंग का एक कीट-पतंगा, जो बहुत तेजी से इधर-उधर उड़ता है, इस से आँखों में चोट लग सकती है।

आँखमिचौनी स्त्री. (तद्.) आँखें मूँद कर खोजने (छिपने-खोजने) का खेल।

आँखमिचौनी स्त्री. (तद्.) दे. आँखमिचौनी।

आँखरंजनी स्त्री. (देश.) 1. नेत्रों में काजल लगाने का कार्य 2. शिशु के जन्म के कुछ दिन बाद, बुआ द्वारा उस की आँखों में काजल लगाने की प्रथा है, इस कार्य के लिए बुआ को उपहार दिया जाता है, यह प्रथा आँखरंजनी कहलाती है।

आँगन पुं. (तद्.) घर के मध्य भाग का खुला प्रायः चौकोर स्थान, घर के भीतर का सहन, चौक पर्या. अंगण, अँगना, अजिर, अहाता, चौक, प्रांगण, सहन।

आँगन-बाड़ी स्त्री. (तद्.) 1. अपने ही आँगन में लगी हुई वाटिका दे. शाक वाटिका 2. शिक्षा. घर के सहन में दी जाने वाली शिक्षा की पद्धति; बालबाड़ी दे. नर्सरी।

आँगी स्त्री. (देश.) वक्षस्थल का वस्त्र, चोली, आंगिया।

आँगुर स्त्री. (तद्.) 1. अंगुल, लंबाई आदि नापने की, प्राचीनकालीन इकाई। 2. उँगली।

आँगुल पुं. (तद्.) लंबाई का एक छोटा माप, जो आठ जों के दानों की लंबाई के बराबर होता है, एक उँगली की चौड़ाई।

आँधी स्त्री. (देश.) मैदा आदि खाद्य पदार्थ छानने की छलनी। इस उपकरण की जाली काफी महीन होती है।

आँच स्त्री. (तद्.) 1. गरमी, ताप, आग की लपट से निकलने वाली गरमी 2. ता.अर्थ. क्षति, हानि मुहा. आँच आना- गरमी पहुँचना, क्षति पहुँचना।

आँचना स.क्रि. (तद्.) 1. गरम करना, भूनना, तापना, जलाना 2. प्रवृत्त होना 3. आचमन करना अर्थात् दाएँ हाथ के मध्य भाग पर थोड़ा जल लेकर, बिना होंठों को छुए, मुँह में डालना और पीना।

आँचर पुं. (तद्.) साड़ी का वह छोर जो सिर पर रहकर सामने की तरफ रखा जाता है। आँचल।

आँचल पुं. (तद्.) 1. धोती या साड़ी का छोर, जो पहनने पर सामने वक्ष को ढके रहता है, बिना सिला छोर, पल्ला 2. छोर पर्या. अंचल, अँचरा, छोर, पल्ला, पल्लू मुहा. आँचल पसारना- कुछ माँगने के लिए किसी के आगे हाथ पसारना; आँचल में दाग लगाना- चरित्र-संबंधी लांछन लगाना; आँचल में बाँधना- प्रेमबंधन में बाँधना, सदा के लिए याद रखना; आँचल सँभालना-